चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा। साजा विरह दुंद दल बाजा।।

धूम स्याम घोरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।।

खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बूंद बान बरिसैं घन घोरा।।

…

कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

प्रसंग

यह पद नागमती वियोग खंड से लिया गया है। रत्नसेन के वियोग में नागमती अत्यंत व्याकुल है। इसी समय वर्षा ऋतु का आगमन होता है। सामान्यतः वर्षा का समय मिलन और आनंद का प्रतीक होता है, परन्तु विरहिणी नायिका के लिए यह और भी अधिक पीड़ादायक बन जाता है। जायसी ने प्रकृति के उद्दीपन रूप का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या

जायसी कहते हैं कि असाढ़ का महीना आ गया है। आकाश में बादल गरजने लगे हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो विरह ने युद्ध की तैयारी कर ली हो और उसकी सेना नगाड़े बजा रही हो।

काले-काले घने बादल चारों ओर दौड़ रहे हैं। आकाश में उड़ते सफेद बगुले ऐसे लगते हैं जैसे किसी सेना की ध्वजाएँ (झंडे) लहरा रही हों। बिजली चारों ओर तलवार की तरह चमक रही है। बादलों से गिरती वर्षा की बूंदें मानो बाणों (तीरों) की तरह बरस रही हैं।

वर्षा का यह दृश्य सामान्य जन के लिए आनंददायक है, परन्तु नागमती के लिए यह अत्यंत कष्टदायक है। चारों ओर घटाएँ छा गई हैं, मेंढक, मोर और कोयल ध्वनि कर रहे हैं। ये सब मिलन के संकेत हैं, परन्तु नागमती का प्रिय उसके पास नहीं है।

आगे कवि कहता है कि जो स्त्रियाँ अपने पति के साथ हैं, वे इस ऋतु में अत्यंत सुखी हैं। वे अपने प्रियतम के साथ हँस-बोल रही हैं। किन्तु नागमती कहती है कि मेरा प्रिय बाहर (दूर) है, इसलिए मैं सारे सुख भूल गई हूँ।

1.

“चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा। साजा विरह दुंद दल बाजा।। ”

आषाढ़ मास आ गया है। आकाश में बादल गरज रहे हैं। कवि ने यहाँ अत्यन्त सुंदर रूपक का प्रयोग किया है। बादलों की गर्जना को वह “विरह की सेना के नगाड़े” कहते हैं। ऐसा लगता है जैसे विरह ने युद्ध की तैयारी कर ली हो और उसकी सेना ढोल-नगाड़े बजा रही हो।

भाव: नागमती के हृदय में विरह का युद्ध छिड़ गया है।

2.

“धूम स्याम धोरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।। ”

काले-काले, धुएँ जैसे घने बादल तेजी से दौड़ते हुए आ रहे हैं। आकाश में उड़ते हुए सफेद बगुलों की पंक्ति ऐसे दिखाई देती है मानो किसी सेना की सफेद ध्वजाएँ लहरा रही हों।

यहाँ बादलों को सेना और बगुलों को ध्वजा कहा गया है।

प्रकृति का दृश्य युद्धभूमि जैसा प्रतीत होता है।

3.

“खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बूंद बान बरिसैं घन घोरा।। ”

चारों ओर बिजली तलवार (खड्ग) की तरह चमक रही है। घने बादलों से वर्षा की बूंदें बाण (तीरों) की तरह बरस रही हैं।

बिजली = तलवार

वर्षा की बूंदें = बाण

बादल = सैनिक

यहाँ पूरा वर्षा-दृश्य युद्ध का रूप ले लेता है। विरह नागमती पर प्रहार कर रहा है।

4.

“छत्र लाग बीज मुँड़ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।। ”

बिजली ऐसे चमक रही है जैसे सिर पर छत्र तान लिया गया हो। नागमती कहती है — मेरे प्रिय के बिना मुझे कौन सम्मान देगा?

यहाँ सामाजिक पीड़ा भी झलकती है।

पति के बिना स्त्री अपने को असहाय और अनादृत अनुभव करती है।

5.

“छाये घटा छाई चहुँ फेरी। कंत उबार मदन हों घेरी।। ”

चारों ओर बादलों की घटा छा गई है। नागमती कहती है — हे प्रिय! मुझे कामदेव ने चारों ओर से घेर लिया है, तुम आकर मुझे बचाओ।

वर्षा ऋतु में कामभाव जाग्रत होता है।

विरहिणी के लिए यह स्थिति और भी कष्टदायक है।

6.

“दादुर मोर कोकिला पीउ। करहिं बेनु घट रहे न जीउ।। ”

मेंढक, मोर और कोयल पुकार रहे हैं। उनकी आवाज़ें नागमती के हृदय को बेचैन कर रही हैं। उसका जी नहीं ठहर रहा।

मोर का नृत्य = मिलन का संकेत

कोयल की कूक = प्रेम का प्रतीक

ये सब विरह को उद्दीप्त कर रहे हैं।

7.

“पुष्प नखत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाह मंदिर को छावा।। ”

शुभ नक्षत्र सिर पर आ गया है (अर्थात मिलन के अनुकूल समय आ गया है), परन्तु मैं बिना पति के अपने महल में अकेली हूँ।

प्रकृति और समय मिलन के अनुकूल हैं

परन्तु प्रिय अनुपस्थित है

8.

“जिन्ह घर कंत ते सुखी तिन्ह गावं। कंत पियारा बाहिरें हम दुख पावं।। ”

जिन स्त्रियों के पति घर पर हैं, वे सुखी हैं। वे गीत गा रही हैं। पर मेरा प्रिय बाहर है, इसलिए मैं दुख पा रही हूँ।

यहाँ तुलना द्वारा विरह की पीड़ा और तीव्र हो गई है।

9.

“कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।। ”

प्रिय के बिना मैंने सारे सुख भूल गए हैं। अब मेरे लिए संसार में कोई आनंद नहीं बचा।

यह पंक्ति नागमती की चरम विरह-वेदना को व्यक्त करती है।

काव्य सौंदर्य

1. रूपक अलंकार – वर्षा को युद्ध के रूप में चित्रित करना।
2. उद्दीपन विभाव – प्रकृति के माध्यम से विरह को तीव्र बनाना।
3. अनुप्रास अलंकार – “घन गाजा”, “बूंद बान बरिसैं” आदि।
4. चित्रात्मकता – पूरा दृश्य आँखों के सामने सजीव हो उठता है।
5. विरह रस की प्रधानता – करुण और श्रृंगार (विप्रलंभ) रस का सुंदर संगम।

भावार्थ

यह पद वर्षा ऋतु के माध्यम से विरह-वेदना की तीव्रता को व्यक्त करता है। वर्षा, जो सामान्यतः प्रेम और मिलन की ऋतु मानी जाती है, वही विरहिणी के लिए पीड़ा का कारण बन जाती है। प्रकृति का प्रत्येक उपादान — बादल, बिजली, वर्षा, मोर, कोयल — नागमती के हृदय में विरह की ज्वाला को और प्रज्वलित करता है।

निष्कर्ष

इस पद में कवि ने वर्षा ऋतु के माध्यम से विरह की मानसिक, सामाजिक और शारीरिक पीड़ा का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। प्रकृति यहाँ केवल पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि विरह की सक्रिय सहचरी है।